

॥ स्वाभित्रीशु ॥



“आ भूणशु शर्मा अनंत डोटि मुक्तो सहित
अमने धारी रहेला साक्षात् अक्षरधाम छे.
तेओने दीक्षा आपतां अमने अत्यंत आनंद थाय छे.”

~ भगवान श्री स्वाभिनारायण
५भाण, विङ्गम संवत १८६६, पोष शुक्ल पूर्णिमा
अक्षरधर श्री गुणतीतानंद स्वाभीशुनी दीक्षातिथि